आमुख

लखनऊ कला महाविद्यालय जो कि क्रमशः स्कूल आफ डिजाइन, गवर्नमेन्ट स्कूल आफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट,गवर्नमेन्ट कालेज आफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट और अब वर्तमान में लखनऊ विश्वविद्यालय का कला एवं शिल्प महाविद्यालय (फैकल्टी आफ फाइन आर्ट) है, इस महाविद्यालय की जीवन गाथा आद्योपांत स्वर्णिम पृष्ठों से भरी हुई है।

इस ईंट और पत्थर के बने प्राणवान विद्या मंदिर को कला साधकों ने अपनी तपस्या और लगन से पवित्र कला तीर्थ बना दिया है, राष्ट्र को इस सांस्कृतिक स्थली पर गर्व है जिसने अन्य कलाओं के साथ ही साथ भारतीय आधुनिक चित्रकला को भी अपने योगदान से प्रभावित ओर सम्पन्न रूप दिया है जिसकी पृष्ठभूमि में यहाँ के महान कलागुरू और योग्य शिष्य परम्परा के व्यक्तियों की समृद्धि और प्रसिद्धि रही ।

स्वांतः सुखाय में चित्रण करने वाले कलाकारों की तूलिका सामाजिक संदर्भों को ही छूती है, समाज से ही वह संवेदना प्राप्त करती है और समाज के लिये ही अर्पित कर देती है। कला का यही उद्देश्य है कि वह मनुष्य को मनुष्य से जोड़े रखे, रचना की सार्थकता यही है कि वह सफल संवाद करे । भारतीय आधुनिक चित्रकला का परिवेश आज के जनमानस के रूझान का वातावरण ही दर्शाता है, इसमें अनेक संस्कारी व्यक्तित्वों, अभिव्यक्ति के धनी कलाकारों द्वारा कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ के प्रेरक, कलामय सानिध्य से भारतीय आधुनिक चित्रकला में अबाध रूप से योगदान किया है।

सभी के वैविध्य पूर्ण जीवन परिचय, रूचियां, रूझान, कार्य, गतिविधियां, आयोजन आदि अनेक क्रियाओं द्वारा इस महाविद्यालय का देश में अपना एक उदात्त व्यक्तित्व सा स्थापित हो गया है। यहाँ अंग्रेजी समय में सर्वप्रथम आये श्री नेथेनियल हर्ड के बाद श्री असित कुमार हाल्दार, आचार्य ललित मोहन सेन, श्री हरिहर लाल मेढ़, पद्मश्री सुधीर रंजन खास्तगीर, श्री दिनकर कौशिक, पद्मश्री रणवीर सिंह बिष्ट, श्री वीरेश्वर सैन, विश्वनाथ खन्ना, बी.सी. गुई,

श्रीराम वैश्य, श्री मदनलाल नागर, श्री अजमत शाह, श्री एन.महापात्र, श्रीमती प्रभा पंवार, श्री स. गं.श्रीखण्डे, श्री बी.एन. आर्य, श्री एन.एन. राय, श्री राम जैसवाल, श्री आर.एस. धीर, श्री सतीश अग्रवाल, श्री जयकृष्ण अग्रवाल, श्रीमती सरोज गोगी, श्री श्यामसुन्दर शर्मा, श्री सुरेश श्रीवास्तव, श्री देवेन सेठ आदि गुणी कलाकारों को कौन नहीं जानता, इनका यथा सम्भव श्रृंखलायुक्त व्यक्तित्व और कृतित्व व्यक्त करने की चेष्टा के पीछे मेरा यही मंतव्य है कि लखनऊ कला महाविद्यालय का सानिध्य भारतीय आधुनिक चित्रकला में योगदान के लिये कितना उर्वरक और प्रेरक रहा है और अब भी वह निरंतर जारी है।

लखनऊ कला महाविद्यालय स्वयं शोधकर्ता की गुरूपीठ रही है, उसके प्रति श्रद्धा, लगन और अध्ययन की प्रेरणा बहुत दिनों से रही है लेकिन कोई ऐसा ग्रन्थ आदि रचना न प्राप्त कर सका जोकि इस पुण्य कला तीर्थ की समग्र जानकारी देता, अतः इस कार्य के लिये स्वयं प्रेरित हुआ ।

उत्तर प्रदेश राज्य ललित कला अकादमी के प्रकाशनो में लखनऊ कला महाविद्यालय और उसके कलाकारों के कृतित्व और व्यक्तित्व पर यथेष्ट प्रकाश डाला जाता रहा है और राष्ट्रीय ललित कला अकादमी द्वारा भी यहाँ के चर्चित कलाकारों के मोनोग्राफ्स प्रकाशित करके अत्यन्त उपयोगी सामग्री दी है और स्वयं कला महाविद्यालय की रचना आदि पत्रिकाओं में इसके संक्षिप्त परिचय को ही प्रकाशित किया जाता रहा है लेकिन जिज्ञासुओं के लिये वह पर्याप्त नहीं है।

अतः ऐसे अध्ययन की मैंने आवश्यकता समझी जो भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन या राजनैतिक और सामाजिक चेतना के साथ ही उत्तर प्रदेश में आधुनिक समय के प्रथम कला केन्द्र की कला परम्परा को व्यवस्थित रूप से संजोकर, राष्ट्र तथा प्रान्त की आधुनिक सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना को प्रस्तुत कर सके जिसके अन्तर्गत देश के प्रमुख चित्रकारों में गिने जाने वाले यहाँ के कलाकारों की रचना के सृजन वैशिष्ट्य को तकनीकी एवं शैलीगत रूप से व्यक्त करे, अतः मेरे द्वारा यह चेष्टा हुई है कि लखनऊ कला महाविद्यालय द्वारा भारतीय आधुनिक चित्रकला में योगदान विषय पर अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। आशा है कि यह लखनऊ कला महाविद्यालय के महत्व को दर्शाने में सहायक सिद्ध होगा ।

शोधार्थी - शिवेन्द्र सिंह